संपादकीय

पारदर्शी हो नियुक्ति प्रक्रिया

आखिरकार सरकार ने तीन सप्ताह के भीतर पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के लिये नये मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति को मंजूरी दे दी लेकिन दिल्ली उच्च न्यायालय जहां न्यायमूर्ति गीता मित्तल पिछले साल 14 अप्रैल से कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश हैं, को अभी भी मुख्य न्यायाधीश का इंतजार है।

यहां यह तथ्य भी दिलचस्प है कि कॉलेजियम ने 19 अप्रैल को सिफारिश की थी कि चूंकि मुख्य न्यायाधीश चार मई को सेवानिवृत्त हो रहे हैं, इसलिए इलाहाबाद उच्च न्यायालय के वरिष्ठतम न्यायाधीश कृष्ण मुरारी को इस उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया जाये मगर सरकार ने इस पर अपनी मुहर लगाने में एक महीने से भी अधिक का वक्त लिया।

न्यायाधीशों के चयन और नियुक्ति की कॉलेजियम प्रक्रिया वैसे तो करीब तीन दशक से विवाद का केन्द्र बनी हुई है। पिछले करीब तीन साल से इस व्यवस्था पर असंतोष व्यक्त किया जा रहा है। राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग कानून निरस्त करने वाली संविधान पीठ के सदस्य न्यायमूर्ति जे. चेलामेश्वर ने अपने फैसले में मौजूदा कॉलेजियम व्यवस्था की खामियों को पहली बार पूरी साफगोई के साथ उजागर किया था।

यही वजह है कि अब यह सवाल जोर पकड़ रहा है कि क्या न्यायाधीशों के चयन और उनकी नियुक्ति यों की सिफारिश करने वाली कॉलेजियम की प्र या पारदर्शी बनाने की दिशा में कदम उठाये जाने के बावजूद इसके प्रति अविश्वास बढ़ता जा रहा है। इसकी सिफारिशों को लेकर न्यायपालिका के भीतर और बाहर आलोचनायें होने लगी हैं। उत्तराखंड उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के. एम. जोसेफ को पदोन्नति देकर शीर्ष अदालत में नियुक्त करने की कॉलेजियम की 10 जनवरी की सिफारिश लौटाये जाने के बाद सरकार के साथ ही कॉलेजियम की कार्यशैली को लेकर सार्वजनिक रूप से आलोचनायें तेज हो गयीं।

न्यायमूर्ति जोसेफ की फाइल प्रधान न्यायाधीश के पास सरकार के नोट के साथ वापस आने के बाद कॉलेजियम की दो बैठकें हो चुकी हैं लेकिन अभी तक उनके नाम की फिर से सिफारिश नहीं की गयी है। इस बीच, पूर्व प्रधान न्यायाधीश तीरथ सिंह ठाकुर और आर. एस. लोढा की सार्वजनिक टिप्पणियों के बाद केरल उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद से सेवानिवृत्त होते वक्त न्यायमूर्ति पी. कमाल पाशा की तल्ख टिप्पणियां इसका सबूत हैं कि न्यायाधीशों की नियुक्ति यों की प्रक्रिया में सब कुछ ठीक नहीं है। न्यायाधीशों की नियुक्ति के मामले में जाति और क्षेत्रीयता आदि को लेकर चल रही बहस के संदर्भ में उन्होंने यहां तक कहा कि वह इसमें यकीन नहीं करते कि प्रत्येक धर्म, जाति अथवा उपजाति को न्यायाधीश का पद आवंटित किया जाना चाहिए। उन्होंने यह कहने में संकोच नहीं किया कि कॉलेजियम न्यायाधीश पद के लिये ऐसे वकीलों की सिफारिश करती है जो इसके लिये उपयुक्त नहीं हैं।

हाल ही में कांग्रेस नेता पी. चिदंबरम ने इस गतिरोध का ठीकरा न्यायपालिका पर फोड़ने का प्रयास किया। उनका कहना था कि न्यायमूर्ति जोसेफ के नाम की फिर से सिफारिश करने का फैसला लेने के बावजूद इसे सरकार के पास भेजने के निर्णय को टालने के लिये फिलहाल तो न्यायपालिका को ही जिम्मेदार ठहराया जायेगा। देश के आजाद होने के बाद 26 जनवरी, 1950 में उच्चतम न्यायालय के अस्तित्व में आने के समय से ही उच्च न्यायालयों और उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति कार्यपालिका के माध्यम से राष्ट्रपति करते आ रहे थे परंतु न्यायाधीशों की नियुक्ति की व्यवस्था में एस. पी. गुप्ता बनाम भारत सरकार प्रकरण में न्यायालय के 1982 निर्णय से कुछ बदलाव आया लेकिन अक्त ूबर 1993 में उच्चतम न्यायालय की व्यवस्था ने न्यायाधीशों की नियुक्ति का काम कार्यपालिका से शीर्ष अदालत या कहें कि न्यायपालिका ने अपने हाथ में ले लिया था।

अतः राष्ट्रपति ने इस प्रकरण से जुड़े सवालों पर 23 जुलाई 1998 को उच्चतम न्यायालय से राय मांगी। न्यायालय की संविधान पीठ ने 28 अक्त ूबर, 1998 को अपनी राय में कार्यपालिका को एकदम किनारे लगा दिया। चूंकि 68 साल में कार्यपालिका द्वारा न्यायाधीशों की नियुक्ति के 32 साल के अनुभव और इसके बाद 36 साल तक कॉलेजियम व्यवस्था को लेकर उठ रहे विवादों के मद्देनजर महसूस किया जा रहा है कि वर्तमान प्र िया में व्यापक बलदाव की जरूरत है। शीर्ष अदालत के अक्त ूबर 2015 के फैसले में दिये गये निर्देशों के बाद भी पूरक मेमोरेंडम आफ प्रोसीजर को अभी तक अंतिम रूप नहीं दिया जाना भी अनेक सवालों को जन्म दे रहा है।

इसलिए उचित होगा न्यायाधीशों के चयन, नियुक्ति और स्थानांतरण के लिये ऐसी व्यवस्था अपनाई जाये जो पूरी तरह पारदर्शी हो और जिसमें भाई-भतीजावाद के आरोप लगने की गुंजाइश कम हो।

सियासी तपिश से बेहाल लोकतंत्र

समझ में नहीं आता चुनावी मौसम में ही ईवीएम से गड़बड़ियों का भूत क्यों निकलता है? पहले कहां मर जाता है। उसे भी कोई भूत पकड़े रखता है जो चुनावी मौसम में छोड़ देता है। लोकतंत्र है, हो सकता है गड़बड़ी को गड़बड़ी पकड़ ले। कान में फूंक मार दे, अभी कहां निकल रही है। बाहर तो भीषण गर्मी पड़ रही है। टेंपरेचर हाई हो रहा है। आग बरस रही है। मतदान के दिन निकलेंगे। ठीकरा किसी के भी सिर फोड़ देंगे।

ईवीएम से गड़बड़ियों का भूत निकलता है तो निकले लेकिन ठीकरा तो अपने सिर पर फोड़े। सियासती एक-दूसरे के सिर पर ठीकरा फोड़ते हैं तो बीच-बचाव में लोकतंत्र को आना पड़ता है। बीच-बचाव में सियासती तो अपना सिर बचा लेते हैं और लोकतंत्र का सिर फूट जाता है। लोकतंत्र का सिर फूटता है तो लोकतंत्रवादी भी मरहम-पट्टी नहीं करवाते।

पिछले दो-तीन साल में ईवीएम जितनी बदनाम हुई है, उतनी तो मुन्नी भी बदनाम नहीं हुई होगी। कभी छेड़खानी के आरोप लगे तो कभी इसकी

विश्वसनीयता को लेकर सवाल उठे हैं। लेकिन लू पहली बार लगी है। इन दिनों मौसमी टेम्परेचर इतना बढ़ रहा है कि पंखे, कूलर व एसी गले में फांसी का फंदा लटकाए हुए हैं। ये तो गर्मी से इतने तंग आ गए हैं कि इनका बार-बार खुदकुशी करने को मन करता है। लेकिन हर बार घंटा-आध घंटा स्विच ऑफ करके बचा लिया जाता है।

यह तो शुक्र है की ईवीएम के लू ही लगी। गर्मी से तंग आकर खुदकुशी नहीं की। वरना सवाल ही नहीं उठते, सुलगते भी। जब सवाल सुलगते हैं तो आग उगलते हैं। उगलती आग किसी को भी निगल सकती है। मौसमी टेम्परेचर की तरह सियासी टेम्परेचर भी इतना बढ़ रहा है, जिससे लोकतंत्र को मुंह पर दुपट्टा बांधकर चलना पड़ रहा है।

अभी तो सियासी लू 2019 तक तीव्र गति से चलेगी। संभावना है आम चुनाव तक तो सियासी टेम्परेचर अड़तालीस डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुंच जाएगा। अड़तालीस डिग्री सेल्सियस में लोकतंत्र का क्या हाल होगा? फिर भी लोकतंत्र जनतंत्र के लिए रेगिस्तान में सेना के जवान की तरह तैनात रहता है।

ईवीएम लू की चपेट में आई तो उसकी दूसरी ईवीएम बहन उसकी जगह आ गई। कल को लोकतंत्र लू की चपेट में आकर बीमार पड़ गया तो इसकी जगह कौन आएगा? लोकतंत्र के तो कोई भाई-भतीजा भी नहीं है जो आ जाएगा। परिवार भी नहीं है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी विरासत में मिली सियासत की सीढ़ियां चढ़कर चला आएगा। लोकतंत्र तो इकलौता है। सच पूछिए तो वे भी पूछने नहीं आएंगे जो बात-बात में कहते हैं कि लोकतंत्र खतरे में है। लोकतंत्र की हत्या हो रही है। जब वाकई में खतरे में होता है ना तब कोई भी खतरा मोल नहीं लेता। सब पतली गली से निकल लेते हैं। लोकतंत्र में 'लोक' की हत्या हो जाती है। लेकिन 'तंत्र' के खरोंच भी नहीं आती।

उपचुनावों की कसक

हालिया उपचुनाव के नतीजे भले ही 2019 के चुनाव परिणामों के कोई स्पष्ट संकेत तो नहीं देते, मगर इतना तय है कि इस बार भाजपा की राह आसान नहीं है। विपक्ष ने जीत का मुहावरा गढ़ लिया है। भाजपा से जीत का नुस्खा छीन लिया है। जिसके बाद भाजपा के नीति निर्धारकों के पांव जमीन पर दिखाई देने लगे हैं। भाजपा पस्त तो नहीं, हांफ जरूर रही है।? उसे अपने ही आंख दिखाने लगे हैं। हमले उ.प्र. सरकार में शामिल दलों की तरफ से मुख्यमंत्री योगी पर भी हुए हैं। बिहार में जद (यू) के तेवरों के बाद अमित शाह के निर्देश पर सूबे के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को राज्य में राजग का चेहरा बताया गया है। इसी बीच खबर आई है कि बिहार सरकार ने प्रधानमंत्री की फसल बीमा योजना को खारिज करके नई फसल बीमा योजना लागू की है। राजग के घटक दलों जद (यू) और शिवसेना के तेवरों ने देश की राजनीति को गर्माया है। यहां तक कि अमित शाह को शिवसेना के शक्ति केंद्र मातोश्री जाकर उद्धव ठाकरे से मिलने का मन बनाना पड़ा। मगर इस मुलाकात से पहले शिवसेना के मुखपत्र सामना में जैसी तीखी टिप्पणी पार्टी प्रवक्ता ने की, वह भाजपा को चौंकाने वाली है।

सामना में लिखा गया है कि उपचुनाव हारने के बाद सहयोगियों की याद आई है। यह भी कि वह 2019 में 'एकला चलो' की नीति पर ही चलेगी।

धरने पर सरकार

देश के इतिहास में पहली बार कोई मुख्यमंत्री अपनी मांगों को लेकर पूरी रात धरने पर बैठा रहा। दिल्ली के

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को रात भर उप-राज्यपाल अनिल बैजल के घर पर धरना दिया। हालांकि आम आदमी पार्टी की सरकार अपने गठन के बाद से ही 'आंदोलनकारी मोड' में है। पहली बार मुख्यमंत्री बनने के तुरंत बाद अरविंद केजरीवाल ने रात भर रेल भवन के सामने धरना दिया था।

पिछले महीने भी सीसीटीवी की फाइल पास करने की मांग को लेकर वह अपने मंत्रियों और पार्टी कार्यकर्ताओं समेत धरने पर बैठे थे। इस बार धरने की वजह दिल्ली की ब्यूरोक्रेसी के साथ लंबे समय से जारी उनकी तनातनी है। उनका आरोप है कि ब्यूरोक्रेसी हड़ताल पर है, लेकिन अफसरों का कहना है कि वे सारे काम मंत्रियों के लिखित आदेश पर कर रहे हैं। मुख्यमंत्री की मांग है कि दिल्ली सरकार में कार्यरत आईएएस अधिकारियों की हड़ताल खत्म कराई जाए, काम रोकने वाले अफसरों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए और दरवाजे-दरवाजे राशन आपूर्ति की योजना को मंजूर किया जाए।

पिछले दिनों राज्य के मुख्य सचिव के साथ हुई अनबन के बाद से ही दिल्ली सरकार के अधिकारी उनके साथ अघोषित असहयोग की मुद्रा में हैं। सीएम के धरने के पहले राज्यपाल और आईएएस असोसिएशन ने साफ कर दिया था कि कोई भी अधिकारी हड़ताल पर नहीं है, लेकिन इसके तुरंत बाद आए राज्यपाल के इस बयान ने आम आदमी पार्टी के नेताओं का क्रोध बढ़ा दिया कि सरकार को अफसरों से बात करनी चाहिए। इसके बाद खुले आरोप-प्रत्यारोप के बीच बातचीत की संभावनाएं और भी कम होती गईं।

केजरीवाल का स्थायी आरोप है कि उप-राज्यपाल केंद्र सरकार के इशारे पर काम करते हैं, लेकिन सच तो यह है कि आंदोलन चलाना सरकार का काम नहीं है। उसका काम है प्रशासन चलाना। आंदोलन पार्टी का काम है। पिछले दिनों केजरीवाल ने कई मामलों में माफी मांगकर मुकदमेबाजी से बचने का रास्ता अपनाया था, ताकि सरकार चलाने पर ध्यान केंद्रित कर सकें। इसका अगला चरण अगर टकरावों का दायरा कम करने के रूप में दिखे तो दिल्ली के लिए राहत की बात होगी।

सबसे बड़ा बलवान

एक बार कालिदास शास्त्रार्थ करने घोड़े पर पड़ोसी राज्य के लिए निकल पड़े। कुछ देर बाद उन्हें काफी जोर की प्यास लगी। रास्ते में कालिदास को एक कुआं दिखाई दिया। वहां एक छोटी-सी बच्ची मटके से पानी भर रही थी। कालिदास ने उस बच्ची से जाकर पानी मांगा। बच्ची ने कहा-पानी पीने से पहले आपको अपना परिचय देना होगा। यह सुनकर कालिदास ने बच्ची से कहा-मेरा नाम कालिदास है। मैं बड़ा विद्वान और बलवान हूं। यदि तुम्हारे घर में कोई बड़ा व्यक्ति हो तो उसे भेजो। वह मुझे देखते ही पहचान लेगा। बच्ची ने कहा कि यदि आपको मुझसे जल पीना है तो आपको अपना पूरा परिचय मुझे ही देना होगा। तब कालिदास ने बच्ची से कहा-मैं बलवान हूं। बच्ची ने कहा-मुझे बताइए कि इस संसार में कौन दो बलवान हैं। यदि आपका उत्तर सही हुआ तो ही मैं आपको जल पिलाऊंगी। कालिदास ने कहा-इस प्रश्न का उत्तर तुम ही दे दो और मुझे जल पिला दो। बच्ची बोली-भूख और प्यास बड़े-बड़े बलवानों को झुका सकती है। अभी प्यास ने आपको भी बेचैन कर रखा है। उस भूख और प्यास को अन्न और जल परास्त कर देते हैं। इस कारण संसार में अन्न और जल दो ही बलवान हैं। महाकवि कालिदास चकित रह गए।

बाजार से नहीं, घर पर ही बनाएं चिली चिकन ड्राई

कितने लोगों के लिए - 2

सामग्री- 2 ग्राम लहसुन, 2 ग्राम अदरक, 2 हरी मिर्च, 200 ग्राम शिमला मिर्च (लाल, पीली और हरी), 200 ग्राम प्याज, 50 ग्राम स्प्रिंग अनियन, ज़रूरत भर रेड चिली सॉस, 1 टेबलस्पून चिली सॉस, 1 टेबलस्पून टमैटो सॉस, 1 टेबलस्पून वाइन विनेगर, 1 टेबलस्पून सोया सॉस, 1 टेबलस्पून विनेगर, 2 ग्राम अजीनोमोटो, नमक स्वादानुसार, 2 ग्राम व्हाइट पेपर, 250 ग्राम बोनलेस चिकेन, 1 एग, थोड़ा रिफाइंड ऑयल, जरूरत भर मैदा और कॉर्नफ्लोर

विधि -

1. चिकेन को छोटे टुकड़ों में काट लें।
2. इन पीसेज पर मैदा, कॉर्नफ्लोर, नमक, अजीनोमोटो, व्हाइट पेपर, रेड चिली सॉस और अंडा डालकर 5 से 7 मिनट के लिए मैरिनेट होने के लिए रख दें।
3. सॉस पैन में तेल गर्म करने के बाद सभी मैरिनेटेड चिकेन को डीप फ्राई कर लें।
4. एक दूसरे पैन में ऑयल डालें। अब इसमें बारीक कटा हुआ अदरक-लहसुन, हरी मिर्च और शिमला मिर्च डालकर अच्छी तरह चलाएं।
5. इसमें थोड़ा सा पानी डालने के बाद बाकी सभी सॉस और मसाले डालकर मिलाएं। 6. अब फ्राइड चिकेन डालें और 1 मिनट तक पकाएं।
7. ऊपर से बारीक कटा स्प्रिंग अनियन डालकर गर्मागर्म सर्व करें।

शब्द सामर्थ्य

बाएं से दाएं

1. ठुड्डी पर के बाल, ठुड्डी, ठोढ़ी 3. विशेष और सामान्य (आदमी), आम और खास लोग (उ.) 5. इच्छा, हसरत, अभिलाषा 6. शारीरिक कोमलता, सुकुमारता (उ.) 7. सविनय, विनती पूर्वक 10. बिलख-बिलख कर रोना 11. कहानी, उपन्यास 12. कुशल, दक्ष, विशेषज्ञ 13. भार, दबाव 14. शुभ-अशुभ की पूर्व सूचना, शुभ अवसर पर होने वाला मंगल कार्य संबंधी गीत 15. एहसान, भलाई, हित 17. सूत काटने, लपेटने में काम आने वाली चर्खे से लगी सलाई 19. एक हिन्दी महीना, श्रावण 20. सप्ताह का एक दिन, बृहस्पतिवार।

ऊपर से नीचे

1. जंगल में लगी आग, दावाग्नि 2. मूल्य, दाम 4. स्वतंत्र, स्वाधीन 5. संकट, कष्ट, दर्द 7. लकड़ी, कन्या, कानों में पहनने का छल्ला, श्रेष्ठ 8. बेइज्जती, अनादार 9. शोभा, सुंदरता, बसंत ऋतु 10. तबाह करने वाला,विनाशक 11. इस समय 13. असुर, राक्षस, दैत्य 14 ए. गुरुमंत्र, बहुत अच्छी युक्ति 15. पर्व, त्यौहार 16. शिकायत, उलाहना, ग्लानि 17. वृक्ष, पेड़ 18. मुंह से निकलने वाला थूक जैसा पदार्थ।

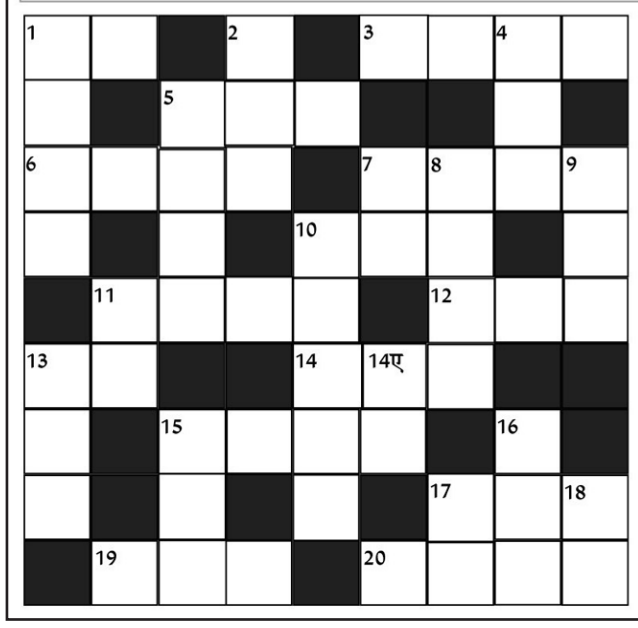

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 37 का हल

खा	म	खां	■	■	इं	■	■	■
स	ह	■	ब	र	सा	त	■	प
■	क	हा	नी	■	न	क	च	ढ़ा
त	■	■	स्ब	■	■	ली	■	ई
क	या	म	त	■	क	फ	न	■
दी	■	र्दा	■	बा	बू	■	ह	वा
र	ह	ना	■	ल	त	खो	र	■
■	वा	■	नौ	क	र	■	■	सा
भा	ई	■	का	■	■	बा	द	ल

सू-दोकू

	6	3		8		1		4
8			3		4		7	
	4			5		8		
3		8			1		4	
	1			4		9		7
		4			2		1	
1				3		4		8
	8		2		9		3	
		9		1		2		5

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.37 का हल

6	7	9	2	4	5	3	1	8
2	1	8	3	7	6	9	5	4
7	6	4	5	2	8	1	3	9
3	8	1	6	9	7	2	4	5
9	2	5	4	1	3	8	6	7
8	3	7	9	6	4	5	2	1
5	4	2	8	3	1	7	9	6
1	9	6	7	5	2	4	8	3
4	5	3	1	8	9	6	7	2

राशिफल

मेष : गणेशजी कहते हैं कि आज विचारों की गतिशीलता से दुविधा का अनुभव हो सकता है। आज का दिन आपके लिए नौकरी-धंधे के क्षेत्र में स्पर्धायुक्त रहेगा और उस में से बाहर आने की कोशिश करते रहेंगे।

वृषभ : मानसिक रूप से उलझन में रहेंगे। आपके जिद्दी स्वभाव को आज त्याग दें, नहीं तो किसी के साथ वाद-विवाद हो सकता है। आज लेखक, कारीगर और कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा।

मिथुन : ताजगी के अनुभव के साथ आज दिन की शुरुआत होगी। घर या कहीं बाहर दोस्तों तथा परिवार के लोगों के साथ आपको मनपसंद खाना खाने का अवसर मिल सकता है। अच्छे कपड़े पहनकर बाहर जाने का प्रसंग बनेगा। आर्थिक लाभ मिलने के योग हैं।

कर्क : ज्यादा खर्च ना हो, इसका ध्यान रखें। कुटुंबीजनों और सहकर्मियों के साथ मनमुटाव हो सकता है। मन में अनेक प्रकार की अनिश्चितता के कारण मानसिक बेचैनी हो सकती है। क्रोध पर संयम रखें, अन्यथा किसी के साथ वाद-विवाद हो सकता है। सेहत का ध्यान रखें।

सिंह : समय पर निर्णय ना ले पाने के कारण आप अच्छा मौका हाथ से गंवा सकते हैं। विचारों में आपका मन अटका हुआ रहेगा। मित्र वर्ग की तरफ से आज आपको लाभ मिलेगा। व्यापार में लाभ होगा। संतान से मुलाकात होगी। अच्छा भोजन प्राप्त होगा।

कन्या : वर्तमान समय में नए कार्यों से संबंधित सफल आयोजन आप कर सकेंगे। व्यापारी वर्ग और नौकरीपेशा वालों के लिए आज का दिन लाभदायक रहेगा। उच्च अधिकारियों की कृपा दृष्टि से प्रमोशन की संभावना दिखाई देगी। व्यापार में लाभ होगा। गृहस्थ जीवन में आनंद का माहौल रहेगा।

तुला : नौकरी पेशा करने वालों को उच्च वर्ग के अधिकारियों की नाराजगी सहनी पड़ सकती है। किसी बाहर वाले की वजह से व्यवसाय में परेशानी आ सकती है। संतान के भविष्य को लेकर चिंता हो सकती है। धार्मिक यात्रा का योग है। प्रतिस्पर्धियों के साथ वाद-विवाद टालें।

वृश्चिक : क्रोध पर सयंम रखें। अनैतिक कार्यों से दूर रहें, नए सम्बन्ध बनाने से पहले सोचें। धन खर्च ज्यादा होने से आर्थिक परेशानी का अनुभव कर सकते हैं। अपने काम को समय से पूरा करें। खाने-पीने का ध्यान रखें।

धनु : आज बौद्धिक तार्किक विचारों के लिए समय बहुत अच्छा है। समाज में मान-सम्मान मिलेगा। मित्रों के साथ मुलाकात होगी। उनके साथ घूमने-फिरने या मनोरंजन स्थल पर जाने का आनंद मिलेगा। साझेदारों से लाभ होगा।

मकर : आज आपको व्यापार में सफलता मिलेगी लेकिन कानून के चक्कर में ना पड़ें, उसका ध्यान रखें। व्यापार के लिए बनाई हुई योजना सफलतापूर्वक संपन्न होगी। पैसों की लेन-देन सफल रहेगी। धन लाभ योग है। कार्य में यश मिलेगा।

कुंभ : लेखनकार्य अच्छी तरह से कर सकेंगे। आपके विचार किसी एक बात पर स्थिर नहीं होंगे तथा उसमें लगातार परिवर्तन होते रहेंगे। संतान के भविष्य को लेकर चिंता हो सकती है। हो सके तो नए काम की शुरुआत आज न करें। आकस्मिक खर्च हो सकता है।

मीन : मकान-वाहन के दस्तावेजों को संभालकर रखें। परिवार का माहौल ना बिगड़े, इसका पूरा ध्यान रखें। माता के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। धन की हानि ना हो, इसके लिए सोच-समझकर निर्णय लें। महिलाओं के साथ व्यवहार में सावधानी रखें।